देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं।
गुर प्रसादें अंतर पेख्या, सो सोभा बरनी न जाई।। ८ ।।

यहां पिण्ड के भीतर और ब्रह्माण्ड में बाहर जो कुछ भी दिखाई पड़ता है वह सबका सब सपना है। पारब्रह्म इसके अन्दर नहीं है। सतगुरु कृपा से ही दूर परमधाम में बैठे पारब्रह्म की पहचान की। इनकी शोभा का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता।

सतगुर सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे।
प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्म सों, तब बिंद अनेक उड़ावे।। ९ ।।

जब सच्चा सतगुरु मिलेगा तभी ब्रह्म और माया की पहचान हो सकेगी। जब पारब्रह्म की पहचान सतगुरु कराएंगे तब ऐसे अनेक ब्रह्माण्डों की चाहना खतम हो जाएगी।

महामत कहे बिंद बैठे ही उड़या, पाया सागर सुख सिंध।
अछरातीत अखण्ड घर पाया, ए निध पूरब सनमंध।। १० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सतगुरु की कृपा से इस माया की चाहना खत्म हो गई और अब अखण्ड सुख का सागर अक्षरातीत श्री राजजी महाराज और अखण्ड घर परमधाम अपनी निसबत (मूल सम्बन्ध) होने के कारण प्राप्त कर लिया।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १५ ॥

राग केदारो

साधो भाई चीन्हो सब्द कोई चीन्हो।
ऐसो उत्तम आकार तोकों दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हों।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो भाई! पहचानो, कोई तो इन पार के शब्दों को पहचानो। तुमको ऐसा सुन्दर मनुष्य तन मिला है जिससे उस सतगुरु की पहचान करो जिसने तुमको अखण्ड परमधाम का पारब्रह्म का ज्ञान दिया है।

मानखें देह अखण्ड फल पाइए, सो क्यों पाए के वृथा गमाइए।
ए तो अधखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नींदर।। २ ।।

मनुष्य तन से अखण्ड पारब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है और किसी तन से नहीं, इसलिए ऐसा मनुष्य तन प्राप्त करके व्यर्थ में क्यों गंवा रहे हो? यह तो तुम्हें आधे क्षण, अर्थात् सीमित समय के लिए अवसर मिला है। इसे अन्य जीवों की तरह अज्ञानता में क्यों गंवा रहे हो?

सब्दा कहे प्रगट प्रवान, सब्दा सतगुरसों करावे पेहेचान।
सतगुर सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे।। ३ ।।

शब्दों से (ज्ञान से) ही सतगुरु की और पारब्रह्म की पहचान होती है। सतगुरु तो हकीकत में वही है जो पारब्रह्म को दिखा दे जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं देखा। बिना उसकी पहचान किए आगे घर (परमधाम) जाना सम्भव नहीं है।

सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई।
सब स्यानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई।। ४ ।।

सतगुरु सब धर्मग्रन्थों की वाणी से उस एक पारब्रह्म की पहचान कराते हैं, क्योंकि सब ग्रन्थों में पारब्रह्म एक ही है, ऐसा लिखा है, किन्तु अज्ञानी लोग ही उन ग्रन्थों में भिन्नता बताते हैं।

Nijanand App

सास्त्रों में सबे सुध पाइए, पर सतगुर बिना क्यों लखाइए।
सब सास्त्र सब्द सीधा कहे, पर ज्यों मेर तिनके आड़े रहे।।५ ।।

धर्मग्रन्थों में सारी जानकारी पारब्रह्म की लिखी है पर बिना सतगुरु के उसके भेद कोई बता नहीं सकता। धर्मग्रन्थ तो स्पष्ट कहते हैं, परन्तु जैसे तिनके के आगे पहाड़ छिप जाता है, वैसे ही घुण्डियां लगी हैं, अर्थात् जैसे आंख के सामने तिनका रख लेने से हम पहाड़ नहीं देख सकते, उसी तरह से यह माया रूपी तिनका पारब्रह्म जैसे पहाड़ को छिपा देता है।

सो तिनका मिटे सतगुर के संग, तब पारब्रह्म प्रकासे अखंड।
सतगुरजी के चरन पसाए, सब्दों बड़ी मत समझाए।।६ ।।

सतगुरु की संगति से ही शब्दों की घुण्डियां (भेद) खुल जाती हैं तथा माया रूपी तिनका हट जाता है और पारब्रह्म और अखण्ड घर की पहचान हो जाती है। सतगुरु के चरणों की कृपा से ही शब्दों में छिपे भेदों को जाना जा सकता है।

तब खोज सब्द को लीजे तत्व, तौल देखिए बड़ी केही मत।
जासों पाइए प्रान को आधार, सो क्यों सोए गमावे रे गमार।।७ ।।

इसके बाद धर्मग्रन्थों के शब्दों को खोजकर सार वस्तु ग्रहण करो और फिर विचार कर देखो कि किसने कहां तक का ज्ञान दिया है। जिन शब्दों से अपने प्राणों के आधार पारब्रह्म मिलते हैं, उसे गंवार लोग व्यर्थ माया की चाहना में गंवा देते हैं।

यामें बड़ी मत को लीजे सार, सतगुर याहीं देखावें पार।
इतहीं बैकुंठ इतहीं सुन्य, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म।।८ ।।

इस संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान को ग्रहण करो। उस जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से सतगुरु यहीं बैठे-बैठे पार की पहचान करा देंगे। वह यहां बैठे ही बैकुण्ठ, शून्य तथा बेहद के पार पूर्ण ब्रह्म की पहचान करा देंगे।

ए बानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार।
मूढ़मती न जाने विचार, महामत कहें पुकार पुकार।।९ ।।

यह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी संसार में गर्जना कर रही है। खोज करने वाले इसे पाकर अपना अज्ञान मिटाते हैं। जिनकी बुद्धि ही मूढ़ है वह इसका विचार नहीं कर सकते और माया में लिपटे रहते हैं। इसलिए महामतिजी पुकार-पुकार कर सावचेत कर रहे हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २४ ।।

राग श्री गौड़ी

साधो हम देख्या बड़ा तमासा।
विश्व देख भया मैं विस्मय, देख देख आवत मोहे हासा।।१ ।।

हे साधो! हमने इस संसार में बड़ा विचित्र तमाशा देखा है। जिसे देखकर मुझे हैरानी भी होती है और हंसी भी आती है।

मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे।
पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे।।२ ।।

यहां के लोग मेरी-मेरी करते हैं और सारे ब्रह्माण्ड का बोझ सिर पर लेते हैं। एक सांस का भी भरोसा नहीं है फिर भी पारब्रह्म को याद नहीं करते।

Nijanand App